प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

वैज्ञानिकों द्वारा कृषि नीतियों व संधियों की विवेचना आवश्यक-देवेन्द्र शर्मा

पंतनगर। 18 नवम्बर, 2018। पंतनगर विश्वविद्यालय स्थापना दिवस कार्यक्रम के अन्तर्गत कल अपराह्न में कुलपति के सभाकक्ष 2 में देर सायं तक चली प्रेस वार्ता में ख्याति प्राप्त कृषि विश्लेषक श्री देवेन्द्र शर्मा ने कहा कि वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय स्तर पर बनायी जा रही कृषि नीतियों एवं भारत व विभिन्न देशों के बीच हो रहीं कृषि से संबंधित अथवा कृषि को प्रभावित करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संधियों की नख-शिख विवेचना की जानी चाहिए, ताकि उनसे कृषि अथवा किसानों पर होने वाले बुरे प्रभावों से सभी को अवगत कराया जा सके तथा उनमें सुधार अथवा उन्हें रोकने का प्रयत्न हो सके। पत्रकारों द्वारा पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने आर्थिक संरचना के साथ-साथ 'राजनीतिक आर्थिकी' को भी समझे जाने की आवश्यकता बतायी। श्री शर्मा ने कहा कि अमेरिका में वर्ष 1960 के बाद किसानों की आय कम हुयी है फिर भी हम अपने किसानों व कृषि की दशा सुधारने के लिए पश्चिम की ओर देखते हैं। अमेरिका में किसानों को सीधे आय सहायता (डायरेक्ट इनकम सपोर्ट) दिये जाने के बारे में बताते हुए उन्होंने भारतीय किसानों को भी सरकारी सहायता दिये जाने की बात कही, ताकि किसान की आय कम से कम 18,000 रूपये प्रति माह हो सके। देवेन्द्र शर्मा ने कृषि विद्यार्थियों के प्रारम्भिक शिक्षण से ही उन्हें भारत एवं विश्व की कृषि की वास्तविक स्थिति एवं विदेशों द्वारा भारतीय कृषि को प्रभावित किये जाने की साजिशों की जानकारी दिये जाने की आवश्यकता बतायी, ताकि वे सही परिपेक्ष्य को समझकर सही मानसिकता के साथ भविष्य में भारतीय कृषि को सही दिशा दे सकें।

प्रेस वार्ता में बोलते हुए कुलपति, डा. तेज प्रताप ने कहा कि हमें विश्वविद्यालय के इतिहास पर गर्व करने के साथ-साथ आज के परिपेक्ष्य में उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों की कृषि को लाभकारी बनाने की ओर ध्यान देना चाहिए। इसके लिए उन्होंने शोध के साथ-साथ शिक्षण एवं प्रसार में बदलाव की आवश्यकता बतायी। किसानों की खेती की लागत कम करने पर उन्होंने विशेष बल दिया। कुलपति ने वैज्ञानिकों से 21वीं शताब्दी में जीव विज्ञान एवं विशेषकर जीन व सूक्ष्मजीवों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कहा, ताकि उनका उपयोग कर कृषि में आशातीत परिवर्तन लाया जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिकों को ऐसे शोध से परहेज करना चाहिए, जिससे किसानों की वर्तमान आय के स्रोतों पर बुरा प्रभाव पड़े। मीडिया प्रतिनिधियों के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि जंगली जानवरों की समस्या का कोई तकनीकी समाधान नहीं है, इसके लिए दूसरे उपाये सोचे जाने होंगे। उन्होंने वैज्ञानिकों व नीति-निर्माताओं को पीएल-480 की मानसिकता से बाहर आने के लिए कहा, ताकि भारतीय परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में सही निर्णय लिये जा सकें। डा. तेज प्रताप ने कहा कि पंतनगर को पहले की तरह भारतीय कृषि को नयी राह की ओर अग्रसर करने हेतु अगुवाई करनी होगी।

प्रेस वार्ता में उपस्थित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक व कुलसचिव ने भी वार्ता में हिस्सा लेते हुए अपने विचार प्रकट किये। विशेष रूप से कुलसचिव डा. ए.पी. शर्मा, अधिष्ठाता कृषि डा. जे. कुमार एवं अधिष्ठात्री गृह विज्ञान डा. रीता सिंह रघुवंशी, ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रकट किये व सुझाव दिये। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री अजय रस्तोगी ने भी देशी बीजों के संरक्षण, किसानों के नवोन्मेषी प्रयासों पर ध्यान देने, किसानों के साथ नयी प्रजातियों के बीज उत्पादन एवं पौष्टिक पर्वतीय खाद्यान्नों के बारे में अपने विचार रखे।

कुलपति सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में भाग लेते कुलपति डा. तेज प्रताप, कृषि विश्लेषक श्री देवेन्द्र शर्मा एवं कुलसचिव, अधिष्ठाता व निदेशक।